1998 से निरंतर प्रकाशित

ISSN 2581-446X

वर्ष-7, अंक-2, 3, अक्टूबर-नवम्बर 2023 - दिसम्बर-जनवरी 2024 संयुक्तांक, ₹50/-

RNI. No. MPHIN/2017/73838

'कला समय' पाठकों के विश्वास और भरोसे का 27 वाँ वर्ष...

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

॥ श्री रामलला विराजमान ॥

श्री राम पर एकाग्र विशेषांक

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

कला समय प्रकाशन

कथेतर गद्य में नई विधा स्थापित करने वाली पहली पुस्तक

छोटे मुँह छोटी सी बात

लेखक : संतोष तिवारी

इसी पुस्तक से–

1. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा का एक अंग चिकित्सकीय राष्ट्रवाद भी था। इसी अवधारणा के अन्तर्गत आयुर्वेद का नवजागरण हुआ।
(आयुर्वेद संस्थान भोपाल का शिलान्यास)
2. हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी भी है जिसे जुगल किशोर सुकुल के ''उदन्त मार्तण्ड'' से लेकर गांधीजी के हरिजन और नवजीवन तक के पुष्ट किया। राजेन्द्र माथुर की पत्रकारिता भी विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित थी।
(राजेन्द्र माथुर स्मृति पत्रकारिता फैलोशिप)
3. अभी लोग इस रास्ते से ना जाने का तरीका ढूँढते हैं, भविष्य में यहीं से जायें इसका बहाना ढूंढेंगे। आज लोग यहाँ से निकलने की भूल नहीं करते कल वे यहाँ आकर सब भूल जाना चाहेंगे। अभी जो इस जगह से परेशान होते हैं आने वाले समय में वे इसे देखकर हैरान होंगे।
(व्ही.आई.पी. रोड, भोपाल का शिलान्यास)
4. प्राणी मात्र अस्तित्व चाहता है और इसी के साथ न्याय भी चाहता है। ये दोनों इच्छायें आपस में गुंथी हुई हैं– अनुस्यूत है, शेर अपने नवजात शावक की रक्षा जी–जान से करता है मगर उसे ज़िन्दा रखने के लिये हिरण के बच्चे का शिकार करता है, अपने लिए न्याय कि शावक को कोई न मारे मगर हिरण के बच्चे के लिए यह सोच नहीं। यही वृत्ति मनुष्य में भी है, डाकू नहीं चाहता कि उसके घर चोरी हो। स्वयं के लिए न्याय मगर दूसरों के लिए परवाह नहीं। यहीं से नियम, कानून, अदालत और वकीलों की शुरुआत होती है।
(राष्ट्रीय विधि संस्थान, भोपाल का शुभारंभ)
5. अपने में थोड़ी सी भी शक्ति के आभास से हम उछलने लगते हैं, उबलने लगते हैं। परहित के प्रति उदासीन होकर छोटे बने रहते हैं और निजहित के लिए विराट और विकराल रूप धारण कर लेते हैं। यह पवन पुत्र के चरित्र के ठीक विपरीत है।
(संकटमोचन हनुमान मंदिर, करौंद कला, भोपाल का उद्घाटन)
6. शास्त्रों के मत में कर्म ही बन्धन का कारण है– उसी के कारण आत्मा शरीर के बन्धन में आ जाती है। इसी तर्ज़ पर कह सकते हैं कि अवांछनीय कर्म के कारण ही शरीर जेल के बन्धन में आ जाता है।
(केन्द्रीय जेल, भोपाल का उद्घाटन)

शुभेच्छु

मेसर्स विजय कुमार मिश्रा

कंस्ट्रक्शन प्रा. लि., द्वारिकानगर, रीवा (म.प्र.)

0755-2562294, 9425678058 kalasamayprakashan@gmail.com
कार्यालय: जे-191, मंगल भवन, ई-6
महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462016 (म.प्र.)

RNI NO. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

(वर्ष : 20+07=27) पूर्णांक-125,126

वर्ष-7, अंक-2, 3, अक्टूबर-नवम्बर 2023 - दिसम्बर-जनवरी 2024 संयुक्तांक, मूल्य : ₹50/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

डॉ. महेन्द्र भानावत

श्यामसुंदर दुबे

कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

महेश श्रीवास्तव

परामर्श

लक्ष्मीनारायण पयोधि

डॉ. नारायण व्यास

प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'

प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि

चेतना श्रीवास

वेबसाइट प्रबंधन

मयंक अग्रवाल

कानूनी सलाहकार

जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

प्रभु श्री राम के इस विशेषांक की पवित्रता, शुद्धता बनाए रखने में सहयोग करें

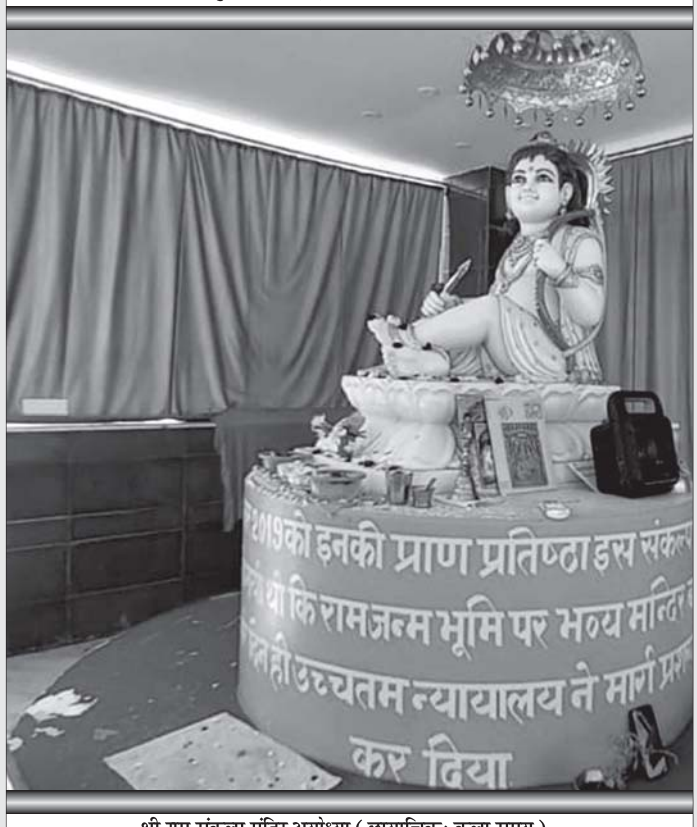

श्री राम संकल्प मंदिर अयोध्या (छायाचित्र : कला समय)

संपादक

भँवरलाल श्रीवास

सलाहकार संपादक

डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा

सह संपादक

डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक

राहुल श्रीवास

सुन्दरलाल प्रजापति

संपादक मंडल

डॉ. बिनय षडंगी राजाराम

साहित्य

अरुण तिवारी

समसामयिक

हरीश श्रीवास

कला, संस्कृति

नरिन्दर कौर

प्रबंध

सदस्यता सहयोग राशि:

वार्षिक	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन (15 वर्ष के लिए)	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 120/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग

जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :

'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।

सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - भँवरलाल श्रीवास

श्रीराम विशेषांक के प्रमुख विद्वान लेखक...

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

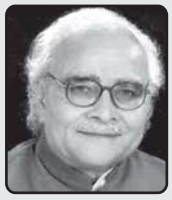
डॉ. राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

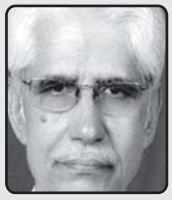
प्रभुदयाल मिश्र

डॉ. श्यामसुंदर दुबे

डॉ. महेन्द्र भानावत

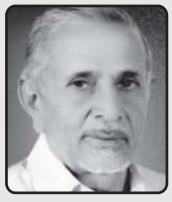
डॉ. भगवानदास पटेल

डॉ. सुमन चौरे

डॉ. मोहन गुप्त

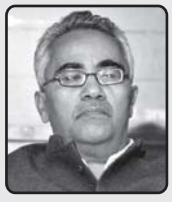
डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र

लक्ष्मीनारायण पयोधि

बी .एल . आच्छा

डॉ. सरोज गुप्ता

डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता

गोविंद गुंजन

डॉ. राजरानी शर्मा

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

अश्विनी कुमार दुबे

चेतन औदिच्य

इस बार

- **संपादकीय**
  प्रभु श्रीराम सत्य के सत्यनारायण हैं !! 05
- **आलेख**
  राम: रूप और स्वरूप / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय 07
- **अद्वैत-विमर्श**
  'अद्वैत : एक अप्रतिम भाव बोध' / डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र 11
- **आलेख**
  षड्दर्शन: श्री रामचरित मानस का संदर्भ / प्रभुदयाल मिश्र 14
  रामकथा : राजमहल से झोंपड़ी तक / डॉ. राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी 18
- **ललित निबंध**
  अनुभव में उतरा रस विशेष / डॉ. श्यामसुंदर दुबे 23
- **आलेख**
  लोक के रोम रोम में बसी रामलीला / डॉ. सुमन चौरे 25
  भारतीय संस्कृति के प्रतीक राम / डॉ. मोहन गुप्त 30
  श्रीरामनाम की महिमा / डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता 32
  'राम-सीतमानी वारता' का धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ / डॉ. भगवानदास पटेल 34
  करुणानिधान श्री राम की करुणा का उत्स ! / डॉ. राजरानी शर्मा 38
- **जनजातीय संस्कृति**
  गोण्ड जनजाति की मौखिक परम्परा में राम / लक्ष्मीनारायण पयोधि 42
- **आलेख**
  बहुआयामी राम की अविराम यात्रा / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय 45
  थोड़ा नेड़ा बसोनी म्हारा रामरसिया / डॉ. महेन्द्र भानावत 59
  सांस्कृतिक सामाजिक आदर्शों के नियामक राम और रामचरितमानस / बी .एल . आच्छा 71
  राम श्रम को धन से ऊपर मानते थे / गोविंद गुंजन 73
- **संगीत चिन्तन**
  श्रीरामचरितमानस का सांस्कृतिक वैशिष्ट्य / डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक' 75
- **आलेख**
  'राम की अनकही व्यथा-कथा' / डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र 81
  श्रीराम का जीवन आदर्श : वर्तमान समय में प्रासंगिक / डॉ. सरोज गुप्ता 85
- **उपन्यास - अंश**
  राम वन प्रवास / अश्विनी कुमार दुबे 87
- **कला-अक्ष**
  शब्द रंग : कलाओं की आवाजाही / चेतन औदिच्य 90
- **वक्तव्य**
  छोटी-सी, गागर में सागर भरने की कला में तिवारी दक्ष हैं / मनोज श्रीवास्तव 93
- **पुस्तक समीक्षा**
  'काव्य समग्र-गीत' के बहाने सृजन में चिति तत्व पर बात / सोमदत्त शर्मा 96
  घोटुल से बिग बॉस तक का सफर / डॉ. अरूण कुमार वर्मा 99
  अशोक अंजुम की गजलों में जीवन की तल्ख सच्चाइयाँ झाँकती है / अनिरुद्ध सिन्हा 101
- **आयोजन**
  कला समय के 27 वर्ष एक अवलोकन प्रदर्शनी एवं पुस्तक लोकार्पण / बालकृष्ण लोखंडे 102
- **पुण्य - स्मरण** 104

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण एवं अंतिम आवरण चित्र** - साभार | **छायाचित्र** -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार | **सहयोग**- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखांकन** : मनोहर काजल **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

संपादकीय

प्रभु श्रीराम सत्य के सत्यनारायण हैं!!

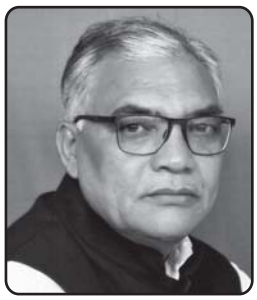

'बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।'

मनुष्य अपने निर्मल आचरण व्यवहार एवं समस्त मानवीय प्रयासों द्वारा इहलोक तथा परलोक को सार्थक बनाकर मोक्ष के दुर्लभ द्वार तक पहुँच सकता है, भगवान को प्राप्त कर सकता है, इसलिये मानव-शरीर को श्रेष्ठ कहा गया है। मनुष्य-जीवन की सार्थकता मानवीय आचरण के सम्पादन में एवं व्यवहार में निहित है। मनुष्य-जीवन ही एकमात्र ऐसा जीवन है जो मनुष्यत्व से देवत्व प्राप्त कर सकता है, नर से नारायण बन सकता है। मनुष्य की मनुष्यता त्याग, अहिंसा, तप, सहिष्णुता, सत्य, परहित एवं सदाचरण आदि में निहित है।

प्रभु श्रीराम ने पशु-पक्षी के रूप में मान्यता प्राप्त वानर-भालुओं, गीधों, सुपर्णों को मैत्री के अटूट बन्धन में बाँध, उनकी सामाजिक कुरीतियों और पिछड़ेपन को दूर करने वाले विविध उपायों का मार्ग प्रशस्त कर तत्कालीन मानव समाज की अकल्पनीय सेवा की थी। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** राम के मन में न हिंसा है, न घृणा और न प्रतिस्पर्धा; फिर भी शस्त्र उनके हाथों में आभूषणों की तरह शोभा देते हैं। फूल-सा व्यक्तित्व होते हुए भी वे श्रेष्ठ योद्धा हैं, शक्ति सम्पन्न हैं। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं- **'रामः शस्त्रभृतामहम्'** शस्त्रधारियों में मैं श्रीराम हूँ!

पंचमहाव्रत- सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह के रूप में प्रतिष्ठित हैं इसमें 'सत्य' महाव्रत पंच महाव्रतों की आधारशिला अथवा ऐसा प्रथम दृढ़ सोपान है, जिस पर आरूढ़ होकर जीव या मनुष्य स्थिरधी अथवा स्थिरमति होकर अन्य महाव्रतों के परिपालन में सहज ही सिद्ध हो जाता है। सत्य के अनुष्ठानकर्ता को शिव और सौन्दर्य सहज ही प्राप्त हो जाता है। उस नित्य सत्य आनन्दमय स्थिति की प्राप्ति भी हो जाती है जिसको **'सत्यं शिवं सुन्दरम्'** कहते हैं। और जिसके पाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है। **'सत्यं परं धीमहि'** सत्य की महत्ता स्वयं सिद्ध है। यहाँ सत्य के स्वरूप एवं तत्वार्थ को भी जान लेना चाहिये। सत्य **(सते हितम्)** सत् धातु से (यत्) प्रत्यय से बनता है। इसका अर्थ सच्चा या ईमानदार है तथा स्वरूप निश्छल अथवा निष्कपट है। **'सत्य'** समस्त सद्गुणें एवं शुचिता तथा कल्याण का प्रतीक है।

मनुस्मृति में नौ गुणों के साथ दसवें गुण सत्य को धर्म के रूप में स्वीकार किया गया है। बृहदाव्यकोपनिषद में मानव को सच्चा मानव बनाने के लिये उस परम सत्ता से प्रार्थना की गयी है कि हे जगदाधार! मुझे (सही मानव बनने के लिए असत् से सत् की ओर ले चलिये- **'असतो मा सद्गमय'** सदाचार विहीन व्यक्ति को पूर्णत: अपवित्र ही कहा गया है- **'आचारहींन न पुनन्ति वेदाः।'** मनुस्मृति सदाचरण को ही श्रेष्ठ धर्म मानती है। **''आचारः परमो धर्मः।''** मनुस्मृति यह भी स्पष्ट उद्घोष करती है कि समस्त गुणों से हीन होने पर भी सत्यवान् या सदाचारी व्यक्ति ही मनुष्य कहलाने योग्य है एवं वही चिरजीवी होता है। सत्य की महत्ता को स्वीकार करते हुए अथर्ववेद में कहा गया है कि सत्य बोलने वाले व्यक्ति के प्राण लोक में प्रतिष्ठित होते हैं। महाभारत में भी कहा गया है कि सत्य ही स्वर्ग या मुक्ति का सोपान है **'सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्'**। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और असत्य या झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है। तुलसीदास जी ने कहा है कि **'धरमु न दूसर सत्य समाना।'** वाल्मीकीय रामायण में भी सत्य को मानव के कल्याण का परम धर्म कहा गया है- **'आहुः सत्यं हि परमं धर्मं धर्म विदो जनाः।'** सत्य की महत्ता को सर्वोपरि निरूपित करते हुए आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने सत्य को परब्रह्म के पद की प्रतिष्ठा प्रदान की है। सत्यनारायण का स्पष्ट अर्थ है- **'सत्य मेव नारायणः।'** अर्थात सत्य ही नारायण हैं। आप सदा शान्त रहें निर्विकार रहें, सम रहने की चेष्टा करें जगत् के खेल से अपने को प्रभावित न होने दें। आप सदा सुखी रहेंगे। फिर न कुछ बढ़ाने की इच्छा होगी और न घटने पर दु:ख होगा। इस जगत् में हम भगवान के प्रेम में जिमें अर्थात प्रेम की बात करें, प्रेम की बात सुनें, प्रेम के कार्य करें, सपने भी देखें तो प्रेम के ही और अन्त में प्रेममय

।।श्री रामोत्सव।।
सप्तपुरियों में प्रथम श्री अयोध्या धाम में प्रभु श्रीराम के बाल रूप विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर प्रफुल्लित, श्रद्धावनत 'कला समय'

भगवान में जाकर हम विलीन हो जायँ। प्राणिमात्रा के परमात्मस्वरूप जानकार उनकी सेवा के लिये किया जाने वाला कर्म शुभ है और इससे विपरीत प्राणियों को दु:ख देने वाला कर्म अशुभ है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

हमारे आदर्श प्रेमघट श्रीराम हैं। संत कबीर के शब्दों में यदि हम श्री राम के ढाई अक्षर के प्रेम गुण को सीख लें, पढ़ लें, आत्मसात् कर लें तो हमारा परम कल्याण सुनिश्चित है- '**ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होइ।।**' शास्त्र-मर्यादाओं से निबद्ध श्री राम के चरित्र में भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही पारिवारिक और सामाजिक जीवन के उच्चतम आदर्श पाये जाते हैं। '**राम-राज्य**' का आदर्श भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। आज भी हम उससे प्रेरणा तथा शक्ति लेकर अपने अशान्त एवं अस्थिर जीवन में '**सत्यं शिवं सुन्दरम**' की त्रिवेणी प्रवाहित कर सकते हैं।

प्रभु श्री राम पर केन्द्रित यह महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा विशेषांक के लिये हमारे बहुत ही अल्प समय के अनुरोध पर जिन-जिन विद्वानों, लेखकों ने अपना रचनात्मक सहयोग दिया है हम उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

''कला समय'' के 27 वर्ष एक अवलोकन'' प्रदर्शनी आयोजित करने हेतु हम बिड़ला संग्रहालय और विशेष रूप से बी.के. लोखंडे के विशेष आभारी हैं। 'कला समय' की यह अनोखी प्रदर्शनी जो कि 21 दिसम्बर 2023 से 03 जनवरी 2024 तक अंतरराष्ट्रीय विश्वरंग महोत्सव की गतिविधियों के अंतर्गत एवं जी.पी. बिड़ला संग्रहालय भोपाल के तत्वावधान में रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, वनमाली सृजनपीठ, प्रेरणा पत्रिका एवं प्रेरणा पब्लिकेशन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण मंडल, कला समय संस्कृति, शिक्षा और समाज सेवा समिति एवं कला समय प्रकाशन के आत्मीय सहयोग से सम्पन्न हुई। हम सभी सहयोगी संस्थाओं के हृदय से आभारी हैं। आशा करते हैं कि भविष्य में भी कला समय पत्रिका को इसी तरह का सहयोग मिलता रहेगा।

नववर्ष एवं 75वाँ गणतंत्र दिवास की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभमस्तु।

- भँवरलाल श्रीवास

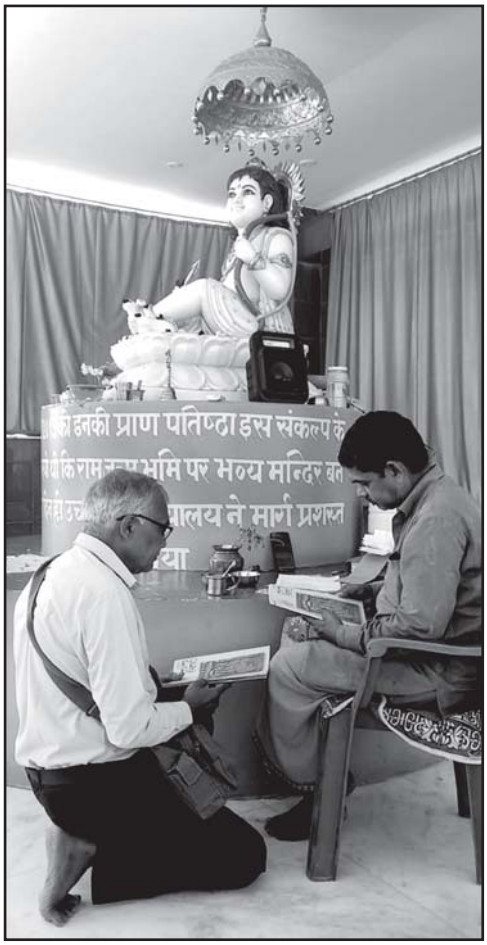

श्री राम मंदिर अयोध्या जहाँ 8 नवम्बर 2019 को ''रामजन्मभूमि पर भव मंदिर बने'' का संकल्प स्थान पर 'कला समय' पत्रिका के साथ संपादक भँवरलाल श्रीवास